पुणा International School
Shree Swaminarayan Gurukul, Zundal

Std-VIII Subject-Hindi

Summative Assessment Assignment-2 (2022-23)

(अपठित विभाग)

प्रश्न_1 अपठित गद्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए।

मेरा देश भारत संसार के देशों का सिरमौर है। यह प्रकृति की पुण्य लीलास्थली है। माँ भारत के सिर पर हिमालय मुकुट के समान शोभायमान है। गंगा तथा यमुना इसके गले के हार हैं। दक्षिण में हिंद महासागर भारत माता के चरणों को निरंतर धोता रहता है। इस देश की उर्वरा धरती अन्न के रूप में सोना उगलती है। संसार में केवल यही एक देश है जहाँ षड्ऋतुओं का आगमन होता है, गंगा, यमुना, सतलुज, व्यास, गोमती, गोदावरी, कृष्णा, अनेक ऐसी नदियाँ हैं जो अपने अमृत-जल से इस देश की धरती की प्यास शांत करती हैं। हमारा प्यारा देश 'विश्व गुरु' रहा है। यहाँ की कला, ज्ञान-विज्ञान, ज्योतिष, आयुर्वेद संसार के प्रकाशदाता रहे हैं। यह देश ऋषि-मुनियों, धर्म-प्रवर्तकों तथा महान कवियों ने बनाया है। त्याग हमारे देश का सदैव से मूल मंत्र रहा है। जिसने त्याग किया, वही महान कहलाया । बुद्ध, महावीर, दधीचि, रंतिदेव, राजा शिवि, रामकृष्ण परमहंस, गांधी इत्यादि महान विभूतियाँ इसका जीता-जागता प्रमाण हैं। भारत पर प्रकृति की विशेष कृपा है। यहाँ पर खनिज पदार्थों का पर्याप्त भंडार है। अपनी अपार संपदा के कारण ही इसे 'सोने की चिड़िया' की संज्ञा दी गई है। धन- संपदा के कारण ही हमारा देश विदेशी आक्रमणकारियों के लिए विशेष आकर्षण का केंद्र रहा है।

(क) उपर्युक्त गद्यांश का उचित शीर्षक दीजिए ।

उत्तर- मेरा प्यारा भारत देश ।

(ख) भारत को संसार के देशों का सिरमौर क्यों कहा जा सकता है?

उत्तर- भारत को संसार का सिरमौर कहा गया है। क्योंकि भारत देश में विश्व के सभी देशों से अधिक विशेषताएँ हैं।

ग) भारत देश का मूल मंत्र क्या है?

उत्तर- भारत देश का मूल मंत्र 'त्याग' अर्थात् दूसरों के लिए जीना है।

(घ) भारत को सोने की चिड़िया' की संज्ञा क्यों दी गई?

उत्तर- भारत की अपार संपदा के कारण भारत को सोने की चिड़िया' की संज्ञा दी जाती है।

(ङ) गद्यांश से कोई दो योजक शब्द प्रयुक्त शब्दों का चयन कीजिए।

उत्तर - ऋषि-मुनियों, धन-संपदा।

2)मनुष्य के जीवन में लक्ष्य का होना बहुत आवश्यक है. लक्ष्य के बिना जीवन दिशाहीन तथा व्यर्थ ही है. एक बार एक दिशाहीन युवा आगे बढ़े जा रहा था, राह में महात्मा जी की कुटिया देख रूककर महात्मा जी से पूछने लगा कि यह रास्ता कहाँ जाता है. महात्मा जी ने पूछा " तुम कहाँ जाना चाहते हो ". युवक ने कहा " मैं नहीं जानता मुझे कहाँ जाना है". महात्मा जी ने कहा "जब तुम्हें पता ही नहीं है कि तुम्हें कहाँ जाना है, तो यह रास्ता कहीं भी जाए, इससे तुम्हें क्या फर्क पड़ेगा " कहने का मतलब है कि बिना लक्ष्य के जीवन में इधर-उधर भटकते रहिये कुछ भी प्राप्त नहीं कर पाओगे. यदि कुछ करना चाहते तो पहले अपना एक लक्ष्य बनाओ और उस पर कार्य करो. अपनी राह स्वयं बनाओ. वास्तव में जीवन उसी का सार्थक है जिसमें परिस्थितियों को बदलने का साहस है.
गांधीजी कहते थे कुछ न करने से अच्छा है, कुछ करना. जो कुछ करता है वही सफल-असफल होता है. हमारा लक्ष्य कुछ भी हो सकता है, क्योंकि हर इंसान की अपनी-अपनी क्षमता होती है और उसी के अनुसार वह लक्ष्य निर्धारित करता है. जैसे विद्यार्थी का लक्ष्य है सर्वाधिक अंक प्राप्त करना तो नौकरी करने वालों का लक्ष्य होगा पदोन्नति प्राप्त करना. इसी तरह किसी महिला का लक्ष्य आत्मनिर्भर होना हो सकता है. ऐसा मानना है कि हर मनुष्य को बड़ा लक्ष्य बनाना चाहिए किन्तु बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छोटे-छोटे लक्ष्य बनाने चाहिए. जब हम छोटे लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं तो बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने का हममें आत्मविश्वास आ जाता है.स्वामी विवेकानंद ने कहा था कि जीवन में एक ही लक्ष्य बनाओ और दिन-रात उसी के बारे में सोचो. स्वप्न में भी तुम्हें वही लक्ष्य दिखाई देना चाहिए, उसे पूरा करने की एक धुन सवार हो जानी चाहिए. बस सफलता आपको मिली ही समझो. सच तो यह है कि जब आप कोई काम करते हैं तो यह जरुरी नहीं कि सफलता मिले ही लेकिन असफलता से भी घबराना नहीं चाहिए. इस बारे में स्वामी विवेकानंद जी कहते हैं कि हजार बार प्रयास करने के बाद भी यदि आप हार कर गिर पड़ें तो एक बार पुनः उठें और प्रयास करें. हमें लक्ष्य प्राप्ति तक स्वयं पर विश्वास रखना चाहिए.

प्रश्न 1 युवक कहाँ जा रहा था? राह में उसे कौन मिला?

उत्तर - एक युवक दिशाहीन चला जा रहा था. रास्ते में उसे कुटिया में महात्मा जी मिले.

प्रश्न 2- युवक तथा महात्मा जी के संवाद को अपने शब्दों में लिखें.

उत्तर - युवक ने महात्मा जी से पूछा कि यह रास्ता कहाँ जाता है. महात्मा जी ने युवक से प्रश्न किया कि तुम्हें कहाँ जाना है. युवक ने कहा कि उसे नहीं पता कि उसे कहाँ जाना है.

प्रश्न 3- विद्यार्थी एवं किसी महिला का क्या लक्ष्य हो सकता है?

उत्तर - विद्यार्थी का लक्ष्य सर्वाधिक अंक प्राप्त करना तथा किसी महिला का लक्ष्य आत्मनिर्भर बनना हो सकता है.

प्रश्न 4- मनुष्य का लक्ष्य कैसा होना चाहिय तथा उसके लिए उसके क्या प्रयास होने चाहिए?

उत्तर - मनुष्य का लक्ष्य हमेशा बड़ा होना चाहिए और बड़े लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए छोटे-छोटे लक्ष्य बनाकर उसकी प्राप्ति के लिए प्रयास करा चाहिए. जब हम छोटे लक्ष्य प्राप्त कर लेते हैं तो हममें आत्मविश्वास आ जाता है.

प्रश्न 5 लक्ष्य प्राप्ति के बारे में विवेकानंद जी के क्या विचार हैं?

उत्तर -लक्ष्य प्राप्ति के बारे में स्वामी विवेकानंद जी ने कहा था कि हजार बार प्रयास करने के बाद भी यदि आप हार कर गिर पड़ें तो एक बार पुनः उठें और प्रयास करें. हमें लक्ष्य प्राप्ति तक स्वयं पर विश्वास रखना चाहिए.

6. उपर्युक्त गद्यांश का एक उपयुक्त शीर्षक दीजिए.?

उत्तर . शीर्षक - जीवन में लक्ष्य का महत्व

3)वहाँ वह सूर्य है जो चमकता है। तो सूर्य आखिर है क्या? वेदों में इसे एक पहिएवाले सुनहरे रथ पर सवार देवता कहा गया है, जिसे सात शक्तिशाली घोड़े पलक झपकते ही 364 लीग की रफ़्तार से दौड़ा कर ले जाते हैं। वह अपने रथ पर सवार होकर आसमान में घूमता रहता है और संसार की हर गतिविधि पर नज़र रखता है। किसने इसे बनाया, जिस पर धरती पर मौजूद जीवन पूरी तरह से निर्भर है? क्या यह मरता हुआ विशाल तारा है या कोई वैज्ञानिक चमत्कार या वाकई सूर्य देवता हैं जो वेदों की साकार आत्मा हैं और जो त्रिदेव का प्रतिनिधित्व करता है-दिन में ब्रह्मा, दोपहर में शिव और शाम में विष्णु।भारतीय पौराणिक गाथाओं के अनुसार, सूर्य के माता-पिता थे-अदिति और कश्यप। अदिति के आठ बच्चे थे। आठवाँ बच्चा अंडे की शक्ल का था। इसलिए उसका नाम रखा मार्तंड यानी मृत अंडे का पुत्र और उसका परित्याग कर दिया। वह आसमान में चला गया और खुद को वहाँ महिमामंडित कर लिया। दूसरा किस्सा यह है कि, अदिति ने एक बार अपने पहले सात पुत्रों से कहा कि वे ब्रह्मांड का सृजन करें। किंतु वे इसमें असमर्थ रहे। क्योंकि वे सिर्फ जन्म को जानते थे, मृत्यु को नहीं। जीवन चक्र स्थापित करने के लिए अमरत्व की ज़रूरत नहीं थी, सो अदिति ने मार्तंड से कहा। उन्होंने फ़ौरन दिन और रात का सृजन कर दिया, जो जीवन और मृत्यु के प्रतीक थे।

क: .मार्तंड द्वारा दिन और रात के सृजन का क्या उद्देश्य था?

उत्तरःमार्तंड द्वारा दिन और रात के सृजन का उद्देश्य था—जीवन और मृत्यु का सृजन कर जीवन चक्र स्थापित करना।

ख :2 वेदों में सूर्य का वर्णन किस तरह किया गया है?

उत्तरः वेदों में सूर्य को एक पहिएवाले रथ पर सवार देवता बताया गया है। इस रथ को सात घोड़े द्रुत गति से खींचते हैं। इस पर सवार होकर सूर्य आसमान का चक्कर लगाता हुआ संसार की हर गतिविधि देखता है।

गं : भारतीय पौराणिक गाथाओं के अनुसार सूर्य क्या है?

उत्तरः पौराणिक गाथाओं के अनुसार, सूर्य अपने माता-पिता अदिति और कश्यप की आठवीं संतान है। अंडे की शक्ल होने के कारण उसका नाम मार्तंड रखा। माता-पिता द्वारा त्यागे जाने पर वह आसमान चला गया।

घ : सुर्य के संबंध में प्रचलित किस्से के आधार पर सूर्य के महिमामंडन का कारण क्या है ?

उत्तरः सूर्य के महिमामंडन का कारण यह है कि अदिति के कहने पर सूर्य के सातों पुत्र ब्रहमांड का सृजन करने में असफल रहे, पर सूर्य ने दिन-रात का सृजन कर जीवन चक्र स्थापित कर दिया और महिमा मंडित हो गया।

ड़ : **गदयांश का उचित शीर्षक दीजिए |**

उत्तर : भारतीय पौराणिक कथा

1) निम्नलिखित काव्यांश को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए|

तरुणाई है नाम सिंधु की उठती लहरों के गर्जन का,
चट्टानों से टक्कर लेना लक्ष्य बने जिनके जीवन का।
विफल प्रयासों से भी दूना वेग भुजाओं में भर जाता,
जोड़ा करता जिनकी गति से नव उत्साह निरंतर नाता।
पर्वत के विशाल शिखरों-सा यौवन उसका ही है अक्षय,
जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।
अचल खड़े रहते जो ऊँचा, शीश उठाए तूफ़ानों में,
सहनशीलता दृढ़ता हँसती जिनके यौवन के प्राणों में।
वही पंथ बाधा को तोड़े बहते हैं जैसे हों निर्झर,
प्रगति नाम को सार्थक करता यौवन दुर्गमता पर चलकर।

(क) कवि ने किसका आह्वान किया है?
(ख) तरुणाई की किन विशेषताओं का उल्लेख किया गया है ?
(ग) चट्टानों से टक्कर लेने का क्या तात्पर्य है?
(घ) मार्ग की रुकावटों को कौन तोड़ते हैं और कैसे?

(ङ) आशय स्पष्ट कीजिए-'जिनके चरणों पर सागर के होते अनगिन ज्वार साथ लय।'
(च) कवि ने युवाओं का अह्वान क्यों किया है ?

उत्तर:

(क) कवि ने युवाओं का आह्वान किया है।
(ख) तरुणाई की निम्नलिखित विशेषताओं का उल्लेख कवि ने किया है-उत्साह, कठिन परिस्थितियों का सामना करना, हार से निराश न होना, दृढ़ता, सहनशीलता आदि।
(ग) चट्टानों से टक्कर लेने का तात्पर्य है-रुढ़ियों के खिलाफ संघर्ष करना।
(घ) मार्ग की रुकावटों को युवा शक्ति तोड़ती है। जिस प्रकार झरने चट्टानों को तोड़ते हैं, उसी प्रकार युवा शक्ति अपने पंथ की रुकावटों को खत्म कर देती है।
(ङ) इसका अर्थ है कि युवा शक्ति जनसामान्य में उत्साह का संचार कर देती है।
(च) कवि ने युवाओं का आह्वान किया है क्योंकि उनमें उत्साह व संघर्ष करने की शक्ति होती है।

2)शांति नहीं तब तक, जब तक
सुख-भाग न सबका सम हो।
नहीं किसी को बहुत अधिक हो
नहीं किसी को कम हो।
स्वत्व माँगने से न मिले,
संघात पाप हो जाएँ।
बोलो धर्मराज, शोषित वे
जिएँ या कि मिट जाएँ?
न्यायोचित अधिकार माँगने
से न मिले, तो लड़ के
तेजस्वी छीनते समय को,
जीत, या कि ख़ुद मर के।
किसने कहा पाप है? अनुचित
स्वत्व-प्राप्ति-हित लड़ना?
उठा न्याय का खड्ग समर में
अभय मारना-मरना?

प्रश्नः

(क) कवि के अनुसार शांति के लिए क्या आवश्यक शर्त है?
(ख) तेजस्वी किस प्रकार समय को छीन लेते हैं?
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को क्या करना चाहिए?
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए क्यों प्रेरित कर रहे हैं ?
(ङ) यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो आपको क्या करना चाहिए?
(च) उपयुक्त शीर्षक दीजिए।

उत्तर:

(क) कवि के अनुसार, शांति के लिए आवश्यक है कि संसार में संसाधनों का वितरण समान हो।
(ख) अपने अनुकूल समय को तेजस्वी जीतकर छीन लेते हैं।
(ग) न्यायोचित अधिकार के लिए मनुष्य को संघर्ष करना पड़ता है। अपना हक माँगना पाप नहीं है।
(घ) कृष्ण युधिष्ठिर को युद्ध के लिए इसलिए प्रेरित कर रहे हैं ताकि वे अपने हक को पा सकें, अपने प्रति अन्याय को खत्म कर सकें।
(ङ) यदि आपको अधिकार से अन्यायपूर्वक वंचित किया जाता है तो हमें अपने अधिकार के लिए लड़ना चाहिए। इसके लिए हमें हथियार उठाने में भी संकोच नहीं करना चाहिए।
(च) शीर्षक- अधिकार

लेखन-विभाग

निबंध

जीवन में शिक्षक का महत्व

शिक्षक एक व्यक्ति को कुशल नागरिक बनाता है। शिक्षक वह प्रकाश है जो सभी के ज़िन्दगी में रोशनी भर देता है। शिक्षक एक मोमबत्ती रूपी ज्ञान का उजाला है जो लोगों को अँधेरे से निकालकर प्रकाश की ओर ले जाती है। शिक्षक की भूमिका किसी से छिपी नहीं है। शिक्षक अपने शिक्षा के ज़रिये व्यक्ति ,समाज और राष्ट्र का निर्माण करता है। उनकी शिक्षा की वजह से व्यक्ति में आत्मविश्वास का संचार होता है जिसकी वजह से वह अपने ज़िन्दगी में कुछ कर गुजरने की चाहत रखता है। शिक्षक एक खूबसूरत आईने की तरह है जिससे व्यक्ति अपने वजूद की पहचान कर पाता है। शिक्षा वह मज़बूत ताकत है जिससे हम समाज को सकारात्मक बदलाव की ओर ले जा सकते है।

शिक्षक एक सभ्य समाज का निर्माण करता है। एक बच्चे के जीवन में उसके माता -पिता उसके प्रथम शिक्षक होते है। शिक्षा की एहमित सबसे पूर्व माता -पिता ही कराते है। उसके पश्चात बच्चा विद्यालय में शिक्षक से रुबरुं होते है जो हर विषय संबंधित ज्ञान बच्चों को प्रदान करता है। अगर छात्र मार्ग भटक जाए तो शिक्षक अपने ज्ञान से उसे सही मार्ग पर ले जाता है। शिक्षक विद्यार्थिओं का मार्ग दर्शक है। ज़िन्दगी के कठिन मोड़ पर जब हम रास्ता भटक जाते है तो कोई न कोई इंसान शिक्षक के रूप में अपनी भूमिका निभाता है। कम उम्र में बच्चे का जीवन गीली मिटटी की तरह होता है। तब शिक्षक एक कुम्हार की तरह उसे शिक्षा रूप हाथों से एक मज़बूत आकार प्रदान करता है।

शिक्षक विद्यार्थिओं को आने वाले बेहतर भविष्य के लिए तैयार करते है। विद्यार्थी के मन में विषय संबंधित और जीवन संबंधित कोई भी दुविधा आये तो शिक्षक उस दुविधा को हल करने में हर मुमकिन कोशिश करता है। शिक्षक की मेहनत की वजह से कोई डॉक्टर ,कोई इंजीनियर ,कोई वकील ,पायलट ,सैनिक इत्यादि बन जाते है। अगर शिक्षक नहीं होंगे तो यह पद पर कोई व्यक्ति कार्यरत नहीं हो पाएंगे । शिक्षक इंसान को अच्छे और बुरे के बीच फर्क करना सिखाते है। वह अधर्म ,घृणा ,ईर्ष्या ,हिंसा इन बुरी आदतों से विद्यार्थिओं को दूर रहना सिखाते है। शिक्षक शिष्टता ,सहनशीलता ,धैर्य से जीवन के संघर्षों से पार करना सिखाते है।

शिक्षक हमे जीवन में अनुशासन का पाठ पढ़ाते है। समय को ठीक तरीके से जो इंसान व्यवसस्थित कर पाए वह ज़िन्दगी में सफलता को छूता है। समय का ज्ञान करना हमे शिक्षक सिखाते है। इसलिए विद्यार्थी जीवन में टाइम टेबल की बड़ी एहमियत होती है। भविष्य में भी मनुष्य इस सीख को कभी नहीं भूलता है। इससे वह कार्य को समन्वय कर सकता है।शिक्षक एक व्यक्ति में राज्य या कोई भी क्षेत्र का नेतृत्व करने के गुण सिखाती है। शिक्षक द्वारा दी गयी शिक्षा सम्पूर्ण राष्ट्र का निर्माण में सहायक होता है। अध्यापक को हमेशा अपने कर्त्तव्य का पालन करना पड़ता है। उनकी शिक्षा की वजह से एक शिक्षित वर्ग और समाज तैयार होता है। विद्यार्थी बड़े होकर अपने शिक्षक को कभी नहीं भूलते है। शिक्षक और विद्यार्थी का बंधन अटूट होता है। यह बन्धन सम्मान और विश्वास का होता है। विद्यार्थी शिक्षक के पैर छूकर उनका सम्मान करना कदापि नहीं भूलते है।

आजकल के शिक्षण प्रणाली में काफी बदलाव आया है। पहले के समय में अध्यापक श्यामपट का उपयोग करते थे। तब बच्चे शिक्षक से सवाल करने में हिचकिचाते थे लेकिन आज के दौर में परिवर्तन आया है। आज बच्चे जिज्ञासु और उत्सुक है। वह शिक्षकों से सवाल पूछते है जो की एक सकारात्मक बदलाव है। आज अध्यापक पढ़ाने के लिए स्मार्ट बोर्ड का उपयोग करते है। स्मार्ट बोर्ड से पढ़ाई आसान हो गयी है। शिक्षक पढ़ाई संबंधित विषयों को पढ़ाने और समझाने के लिए उन्हें वास्तविक जीवन के उदाहरण के साथ जोड़कर समझाते है ताकि बच्चों को सारे तथ्य अच्छे से समझ आ जाये।जैसे हमारा सांस लेना आवश्यक है। इसके बैगर हम जी नहीं सकते है। वैसे ही अध्यापक के बिना विद्यार्थी अधूरे है। शिक्षक नहीं होंगे तो वह विद्या प्राप्त करने में असमर्थ हो जाएंगे। पूरे भारत वर्ष में ५ सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया जाता है। विभिन्न प्रकार के सांस्कृकित कार्यक्रम आयोजित किये जाते ह

शिक्षक नहीं तो देश की प्रगति भी नहीं। शिक्षक अपना सारा जीवन में बच्चो के विकास में समर्पित कर

देते है। उनका सम्मान विद्यार्थी तह उम्र करेंगे। शिक्षक वह ज्ञान का प्रकाश है जो अन्धकार की राह को चीरकर ज्ञान की रोशनी भर देता है।

2. समाचार पत्र पर निबंध

वर्तमान काल में यदि संसार के किसी भी कोने में कोई भी घटना घटित हो तो उसके अगले दिन हमारे पास उसकी खबर आ जाती है। ऐसा सिर्फ समाचार पत्रों के कारण ही संभव हो होता है। आज के समय बिना समाचार पत्र के जीवन की कल्पना करना भी काफी कठिन है। यह वो पहली और आवश्यक वस्तु है, जिसे सभी हर सुबह सबसे पहले देखते हैं। यह हमें पूरे विश्व में हो रही घटनाओं के बारे में जानकारी देकर वर्तमान समय से जुड़े रखने में हमारी मदद करता है। समाचार पत्र व्यापारियों, राजनितिज्ञों, सामाजिक मुद्दों, बेरोजगारों, खेल, अन्तरराष्ट्रीय समाचार, विज्ञान, शिक्षा, दवाइयों, अभिनेताओं, मेलों, त्योहारों, तकनीकों आदि की जानकारी हमें देता है। यह हमारे ज्ञान कौशल और तकनीकी जागरूकता को बढ़ाने में भी हमारी सहायता करता है।

आजकल, समाचार पत्र जीवन की एक आवश्यकता बन गया है। यह बाजार में लगभग सभी भाषाओं में उपलब्ध होता है। एक समाचार पत्र खबरों का प्रकाशन होता है, जो कागजों पर छापा जाता है और लोगों के घरों में वितरित किया जाता है। अलग- अलग देश अपना अलग समाचार संगठन रखते हैं। अखबार हमें अपने देश में हो रही सभी घटनाओं के साथ ही संसार में हो रही घटनाओं से भी अवगत कराते हैं। यह हमें खेल, नीतियों, धर्म, समाज, अर्थव्यवस्था, फिल्म उद्योग, फिल्म (चलचित्र), भोजन, रोजगार आदि के बारे में बिल्कुल सटीक जानकारी देता है।

पहले समय में, समाचार पत्रों में केवल खबरों का विवरण प्रकाशित होता था हालांकि, अब इसमें बहुत से विषयों के बारे में खबरें और विशेषज्ञों के विचार यहाँ तक कि, लगभग सभी विषयों की जानकारी भी निहित होती है। बहुत से समाचार पत्रों की कीमत बाजार में उनकी खबरों के विवरण और उस क्षेत्र में प्रसिद्धि के कारण अलग-अलग होती है। समाचार पत्र या अखबार में दैनिक जीवन की सभी वर्तमान घटनाएं नियमित रुप से छपती है हालांकि, उनमें से कुछ हफ़्ते या सप्ताह में दो बार, एक बार या महीने में एक बार भी प्रकाशित होती है।

समाचार पत्र लोगों की आवश्यकता और जरूरत के अनुसार लोगों के एक से अधिक उद्देश्यों की पूर्ति करता है। समाचार पत्र बहुत ही प्रभावी और शक्तिशाली होते हैं और संसार की सभी खबरों व सूचनाओं को एक साथ एक स्थान पर लोगो को पहुंचाता हैं। सूचनाओं की तुलना में इसकी कीमत बहुत कम होती है। यह हमें हमारे चारों ओर हो रही सभी घटनाओं के बारे में सूचित करता रहता है।

यदि हम प्रतिदिन नियमित रुप से समाचार पत्र पढ़ने की आदत बनाते है, तो यह हमारे लिए काफी लाभदायक हो सकता है। यह हम में पढ़ने की आदत को विकसित करता है, हमारे प्रभाव में सुधार करता है और हमें बाहर के बारे में सभी जानकारी देता है। यहीं कारण है कि कुछ लोगों को नियमित रुप से प्रत्येक सुबह अखबार पढ़ने की आदत होती है।

3 . ए.पी.जे. अब्दुल कलाम पर निबंध

यकीनन डॉ. अब्दुल कलाम ने अपने इस कथन को अपने निजी जीवन में चरितार्थ कर दिखाया। सूर्य की तरह जलकर ही वह सूर्य की तरह चमके और इस देश को अपने व्यक्तित्व व कृतित्व से आलोकित कर अमर हो गए। साधारण पृष्ठभूमि में पले-बढ़े कलाम तमाम अभावों से दो-चार होने के बावजूद विपरीत परिस्थितियों से संघर्ष करते हुए न सिर्फ एक सफल और महान वैज्ञानिक बने, बल्कि देश के सर्वोच्च पद तक भी पहुंचे। वह जीवन की कठिनाइयों के सामने न तो कभी कमजोर पड़े और न ही इनसे घबराए।

उनका जीवन दर्शन कितना व्यावहारिक एवं उच्च था, इसका पता उनके इस कथन से चलता है –"इंसान को कठिनाइयों की आवश्यकता होती है, क्योंकि सफलता का आनंद उठाने के लिए ये जरूरी हैं।" सच्चे अर्थों में वह एक उच्च कोटि के राष्ट्रनायक थे।

डॉ. कलाम ने फर्श से अर्श तक का सफर तय किया। 15 अक्टूबर, 1931 को भारत के तमिलनाड प्रांत के रामेश्वरम में एक गरीब तमिल मुस्लिम परिवार में इस असाधारण प्रतिभा ने जन्म लिया। जन्म के समय शायद ही किसी ने सोचा हो कि यह नन्हा बालक आगे चलकर एक राष्ट्र निर्माता के रूप में भारत को बुलंदी पर ले जाएगा। कलाम के पिता जैनल आबिदीन पेशे से मछआरे थे तथा एक धर्मपरायण व्यक्ति थे।

उनकी माता आशियम्मा एक साधारण गृहिणी थीं तथा एक दयालु एवं धर्मपरायण महिला थीं। मां-बाप ने अपने इस सबसे छोटे बेटे का नाम अबुल पाकिर जैनुलाब्दीन अब्दुल कलाम रखा। जीवन के अभाव कलाम के प्रारंभिक जीवन से ही जुड़े हुए थे। संयुक्त परिवार था और आय के स्रोत सीमित थे। कलाम के पिता मछुआरों को किराए पर नाव दिया करते थे। इससे जो आय होती थी, उसी से परिवार का भरण-पोषण होता था। विपन्नता के बावजूद माता-पिता ने कलाम को अच्छे संस्कार दिए। कलाम के जीवन पर उनके पिता का बहुत प्रभाव रहा। वे भले ही पढ़े-लिखे नहीं थे, किन्तु उनके दिए संस्कार कलाम के बहुत काम आए।

पांच वर्ष की अवस्था में रामेश्वरम के पंचायत प्राथमिक विद्यालय से उन्होंने अपनी प्रारंभिक शिक्षा प्रारंभ की। यहीं उन्हें उनके शिक्षक इयादराई सोलोमन से एक नेक सीख मिली_"जीवन में सफलता तथा अनुकूल परिणाम प्राप्त करने के लिए तीव्र इच्छा, आस्था, अपेक्षा इन तीनों शक्तियों को भली-भांति समझ लेना और उन पर प्रभुत्व स्थापित कर लेना चाहिए।" नन्हें कलाम ने इस सीख को आत्मसात कर आगे का सफर शुरू किया। उन्होंने प्रारंभिक शिक्षा के दौरान जिस प्रतिभा का परिचय दिया, उससे उनके शिक्षक बहुत प्रभावित हुए। प्रारंभिक शिक्षा के दौरान ही अर्थाभाव आड़े आया तो उन्होंने अपनी पढ़ाई जारी रखने एवं परिवार की आय को सहारा देने के लिए अखबार बांटने का काम किया। प्रारंभिक शिक्षा के बाद कलाम ने रामनाथपुरम के एक विद्यालय से हाईस्कूल की शिक्षा पूरी की।

विज्ञान में उनकी गहरी रूचि शुरू से थी। वर्ष 1950 में उन्होंने तिरुचरापल्ली के सेंट जोसेफ कॉलेज में प्रवेश लिया और वहां से बीएससी की डिग्री प्राप्त की। अपने अध्यापकों की सलाह पर उन्होंने स्नातकोत्तर शिक्षा के लिए 'मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी', चेन्नई का रुख किया। वहां पर उन्होंने अपने सपनों को आकार देने के लिए एयरोनॉटिकल इंजीनियरिंग का चयन किया।मद्रास इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी' से तालीम पूरी करने के बाद एक उदीयमान युवा वैज्ञानिक के रूप में कलाम ने विज्ञान के क्षेत्र में अपने स्वर्णिम सफर की शुरुआत की। वर्ष 1958 में उन्होंने बंगलुरू के सिविल विमानन तकनीकी केन्द्र से अपनी पहली नौकरी की शुरूआत की, जहां उन्होंने अपनी विलक्षण प्रतिभा का परिचय देते हुए एक पराध्वनिक लक्ष्यभेदी विमान का डिजाइन तैयार किया। कलाम के जीवन में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया, जब वर्ष 1962 'भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन' (इसरो) से जुड़ने का मौका मिला। जहां एक वैज्ञानिक के रूप में अपनी उपलब्धियों से डॉ. कलाम ने भारत के गौरव को बढ़ाया, वहीं भारत के राष्ट्रपति के रूप में उनका कार्यकाल सराहनीय रहा।

वर्ष 2002 में डॉ. कलाम भारत के 11वें राष्ट्रपति निर्वाचित हुए। उन्होंने देश भर में घूम-घूम कर असंख्य छात्रों को प्रेरित करने, उनके सपने जगाने और उन्हें पूरा करने का जो मंत्र दिया, उसकी मिसाल मिलनी मुश्किल है। उन्होंने यह भी दिखाया कि अपना काम करते हुए विवादों से कैसे दूर रहा जा सकता है। एक अराजनीतिक व्यक्ति होते हुए भी डॉ. कलाम राजनीतिक दृष्टि से सम्पन्न थे। अपनी इसी दृष्टि के बल पर उन्होंने भारत की कल्याण संबंधी नीतियों का जो खाका खींचा, वह अद्भुत है। उनकी सोच राष्ट्रवादी थी। वह एक महान देश हितैषी थे। भारत को एक सबल और सक्षम राष्ट्र बनाना उनका सपना था।

आज कलाम साहब हमारे बीच भले ही नहीं हैं, किन्तु वह देश के नन्हें-मुन्नों की चमकती आंखों, युवकों की आंखों में झिलमिलाते सपनों और बुजुर्गों की उम्मीदों में सदा अमर रहेंगे। हम उनके सपनों का भारत बनाकर उन्हें सच्ची श्रद्धांजलि अर्पित कर सकते हैं।

पत्र लेखन

1.)विद्यालय में योग-शिक्षा का महत्त्व बताते हुए किसी समाचार-पत्र के सम्पादक को पत्र लिखिए।

सेवा में,
सम्पादक महोदय,
दैनिक जागरण,
सेक्टर 30,
दिनांक-26 अप्रैल, 2019
चण्डीग़ढ़, ज़िरखपूर।
विषय- योग-शिक्षा का महत्त्व।
महोदय,

जन-जन की आवाज, जन-जन तक पहुँचाने के लिए प्रसिद्ध आपके पत्र के माध्यम से मैं विद्यालय में योग-शिक्षा के महत्त्व को बताना चाहती हूँ और प्रत्येक व्यक्ति तक पहुँचाना चाहती हूँ।

योग-शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी स्वास्थ्य के प्रति जागरूक होंगें। योग शिक्षा उनके स्वास्थय के लिए बहुत अधिक लाभदायक है। योग के माध्यम से वे अपने शरीर की नकारात्मक ऊर्जा को बाहर निकाल सकते हैं और सकारात्मक ऊर्जा को ग्रहण कर सकते हैं। योग के जरिए वे अपने तन-मन दोनों को स्वस्थ रख सकते हैं और उनके सर्वांगीण विकास में भी सहायता मिलती रहेगी।

आपसे विनम्र निवेदन है कि आप अपने समाचार-पत्र के माध्यम से पाठकों को योग के प्रति जागरूक करे और लोगों को योग-शिक्षा ग्रहण करने के लिए आग्रह करें।
धन्यवाद।
भवदीया
Ünाम, पता, दूरभाषÝ

2) डाकिए की डाक बाँटने के लिए अनियमितता की शिकायत।

सेवा में
डाकपाल महोदय
अंकुर विहार डाकखाना
लोनी, गाजियाबाद।
विषय – डाकिए की डाक बाँटने की अनियमितता के विषय में पत्र
महोदय
सविनय निवेदन यह है कि हमारे क्षेत्र अंकुर विहार गाजियाबाद में गत पाँच-छह महीने से डाक वितरण अनियमितता से स्थानीय निवासी परेशान हैं।
इस क्षेत्र में प्रतिदिन डाक वितरण नहीं होता। डाकिए सप्ताह में केवल एक या दो बार आते हैं तथा मुहल्ले के गेट पर खड़े चौकीदारों को सभी पत्र थमा कर चले जाते हैं। कई बार पत्र गलत पते पर डालकर चले जाते हैं जिससे और भी अधिक परेशानी उठानी पड़ती है। जरूरी डाक तथा तार समय पर न मिलने से कई लोगों को नौकरियों से हाथ धोना पड़ा तथा कुछ बच्चों के दाखिले भी नहीं हो पाए। ये सभी डाकिए त्योहार पर रुपए माँगने तो आ जाते हैं पर डाक देने नहीं। किसी-किसी ने तो मनी आर्डर की राशि भी पूरी न मिलने की शिकायत की है।

आशा है आप उक्त अनियमितताओं को दूर करने के लिए उचित कार्यवाही करेंगे।
धन्यवाद
भवदीय
आयुष रंजन तिवारी

3)आपके जन्म दिन पर आपके मामा जी ने आपको एक सुंदर उपहार भेजा है। इस उपहार के लिए धन्यवाद एवं कृतज्ञता व्यक्त कीजिए।

जी० 501 सुंदर विहार
नई दिल्ली
दिनांक …...
पूज्य मामा जी
सादर प्रणाम

मेरे जन्म दिन पर आपके द्वारा भेजा गया बधाई संदेश तथा एक सुंदर हाथ-घड़ी का उपहार मिला। आपके द्वारा भेजा गया यह उपहार मेरे सभी मित्रों एवं सहपाठियों को भी काफ़ी पसंद आया। मैं तो आशा कर रहा था कि इस बार आप मेरे जन्म-दिन पर स्वयं उपस्थित होकर मुझे स्नेह आशीर्वाद देंगे, परंतु किसी कारण आप न आ सके। जब आपको उपहार प्राप्त हुआ, तो मेरी सारी शिकायत दूर हो गई और आपके प्रति कृतज्ञता से भर गया। आपके द्वारा भेजा गया उपहार मुझे आपके स्नेह का स्मरण कराता रहेगा।

इतने सुंदर उपहार के लिए मैं आपका कृतज्ञ हूँ। आदरणीय मामा जी को सादर प्रणाम, ओजस्व को स्नेह।
आपका भानजा। क ख ग

संवाद लेखन

1)किसी क्षेत्र में कृषि योग्य भूमि पर फैक्ट्रियाँ लगाई जा रही हैं। इससे किसानों की भूमि और रोटी-रोजी छिन रही है। इस संबंध में दो मित्रों की बातचीत को संवाद रूप में लिखिए।

अमन : अरा श्याम कहाँ से चले आ रहे हो?
श्याम: अपने मित्र के घर गया था, जो नहर के उस पार वाले गाँव में रहता है।
अमन : क्यों, क्या जरूरत आ गई थी = श्याम उस गाँव के पास कुछ फैक्ट्रियाँ लगाए जाने की योजना है। वहाँ के किसानों की भूमि अधिगृहीत की जा रही है।
अमन : देश के विकास के लिए फैक्ट्रियों की स्थापना जरूरी है।
श्याम : वह तो है पर क्या कभी सोचा है कि इससे किसानों की रोटी रोजी छिन जाएगी। वे भूखों मरने को विवश हो जाएँगे।
-
अमन : सुना है कि सरकार परिवार के किसी एक व्यक्ति को नौकरी देती है।
श्याम : एक व्यक्ति के नौकरी के बदले सोना उगलने वाली ज़मीन पर फैक्ट्री लगाना ठीक नहीं है। इससे लाभ कम नुकसान अधिक है।
अमन : वह कैसे?

श्याम : फैक्ट्रियाँ लगाने से हरियाली नष्ट तो होगी ही साथ ही पर्यावरण भी प्रदूषित होगा, जिसका दुष्प्रभाव दूरगामी होता है।

अमन : इसका उपाय क्या है?

श्याम: इसका एक विकल्प यह है कि इन फैक्ट्रियों को ऐसी जगह पर स्थापित किया जाए जहाँ की भूमि पथरीली या ऊसर हो

। अमन: इस विषय पर सरकार को विचार करना चाहिए।

श्याम : हाँ, इससे हमारा पर्यावरण संतुलित रह सकेगा और खाद्यान्न भी मिलता रहेगा।

2)बढ़ती महँगाई को लेकर दो नागरिकों की बातचीत को संवाद के रूप में लिखिए।

हरिप्रसाद – अरे पंकज क्या लाए हो बाजार से?
पंकज – जी, अंकल ज्यादा कुछ नहीं, बस थोड़ी सी दालें और चावल ही लाया हूँ।
हरिप्रसाद – अब इस बढ़ती महँगाई ने तो सबका हाथ ही तंग कर दिया है।
पंकज – कुछ न पूछिए! सभी चीजों के दाम आसमान को छू रहे हैं, कोई भी चीज सस्ती नहीं है। कुछ दालों के तो 200 रुपए किलो तक पहुँच गए हैं।
हरिप्रसाद – दालें ही क्या सभी चीजें इतनी महँगी हो गई हैं कि वे आम आदमी की पहुँच से बाहर होती जा रही हैं।
पंकज – पर मेरी एक बात समझ में नहीं आती। महँगाई को रोकने के लिए सरकार क्यों कुछ नहीं कर रही है?
हरिप्रसाद – अरे भैया! मुझे तो लगता है दाल में कुछ काला है। वरना सरकार चाहे तो क्या कुछ नहीं कर सकती। महँगाई के खिलाफ़ कानून बना सकती है। चीजों के दाम तय कर सकती है।
पंकज – यही नहीं, उचित दाम से अधिक मूल्य वसूलने वालों को धर पकड़ भी सकती है।
हरिप्रसाद – हाँ, सरकार आए दिन कुछ न कुछ बयान अवश्य देती है। कभी वायदे करती है, कभी योजनाएँ बनाती है, पर न तो वे वायदे कभी पूरे होते हैं और न ही वे योजनाएँ।
पंकज – आश्चर्य की बात यह है कि विपक्षी पार्टियाँ भी सरकार पर दबाव डालने के लिए कुछ नहीं कर रही हैं।

3) महारानी और सेविकाओ के बीच का संवाद लिखिए |

महारानी: (एक सेविका से) मालिन कहाँ है? जरा बुला तो सही, उस मालिन की बच्ची को।वे
मालिन: (डरती हुई सेविका के साथ महारानी के चरणों में शीश नवाते हुए) आदेश हो महारानी।
महारानी: अरी तू मालिन है कि नागिन?
मालिन: जो भी हूँ हुजूर की सेविका हूँ, राजमाता! महारानी : सेविका नहीं है तू, जान की दुश्मन है हमारी।
मालिन: हे भगवान, हे भगवान यह क्या कह रही हैं राजमाता! मेरा अपराध तो बताइए।
महारानी: अब अपराध पूछ रही है। चोरी और सीना जोरी। देख हमारे शरीर पर नील पड़ गए हैं। हम रातभर सो नहीं सके।
एक सेविका: ऐसा क्यों हुआ राजमाता!
दूसरी सेविका: ऐसा क्यों हुआ राजमाता!
तीसरी सेविका: स्वास्थ्य तो ठीक है राजमाता का?
चौथी सेविका: कोई चिंता तो नहीं राजमाता आपको?
महारानी: अरी, चिंता-विंता नहीं। इस मालिन के कारण हम रात-भर सो नहीं सके। करवट-पर-करवट बदलते रहे। जगह-जगह से हमारी छाल छिल गई है।
मालिन: क्षमा माँगती हूँ राजमाता! क्षमा माँगती हूँ।
एक सेविका: क्या मालिन फूलों की सेज सजाना भूल गई थी राजमाता?
महारानी: नहीं, यह निर्दयी फूलों की सेज लगाना तो नहीं भूली पर ऐसे फूल चुनकर लाई, जिनसे हमारे सारे शरीर पर नील पड़ गए।

व्याकरण- विभाग

काल

क्रिया के जिस रूप से काम होने के समय का बोध हो, उसे काल कहते हैं।

काल के भेद काल के तीन भेद होते हैं-

1. भूतकाल 2. वर्तमान काल 3. भविष्यत काल

1. भूतकाल बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं।

जैसे- कल विद्यालय बंद था।

2. वर्तमान काल क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने का बोध हो, उसे वर्तमान काल कहते हैं। -

जैसे -बबीता ने खाना खाया।

धोबी कपड़े धो रहा है।

अक्षत बाज़ार जा रहा है।

3. भविष्यत काल क्रिया के जिस रूप से कार्य के आगे आने वाले समय में होने का बोध हो उसे भविष्यत काल कहते हैं;

जैसे- हम कल विद्यालय जाएँगे।

सुनीता अंतरिक्ष में गई।

। भूतकाल के छह उपभेद हैं- 1. सामान्य भूतकाल जब क्रिया सामान्य रूप से भूतकाल में सपन्न होती है, तब वह सामान्य भूतकाल कहलाती है

; जैसे-अक्षत ने पत्र लिखा।

वर्षा हुई।

2. आसन्न भूतकाल क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया कुछ देर पहले समाप्त हुई है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं।

जैसे- कल वर्षा हुई थी।

मैंने पाठ पढ़ा था।

3. पूर्ण भूतकाल क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि क्रिया को हुए बहुत समय बीत गया है, उसे पूर्ण भूतकाल कहते हैं।

4. अपूर्ण भूतकाल - क्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया भूतकाल में हो रही थी, परंतु समाप्त नहीं हुई थी, उसे अपूर्ण
भूतकाल कहते है।
जैसे- वर्षा हो रही थी।
5. संदिग्ध भूतकाल भूतकाल की जिस क्रिया के करने या होने के संदेह का बोध हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते

जैसे- अजय ने खाना खाया होगा।
बच्चे स्कूल गए होंगे।

6. हेतु हेतुमद् भूतकाल - यदि भूतकाल में क्रिया के होने या न होने पर दूसरी क्रिया का होना या न होना निर्भर करता है, उसे हेतु हेतुमद भूतकाल कहते हैं
जैसे -यदि तुम आते तो काम पूरा हो जाता।
यदि वर्षा रुक जाती तो बाढ़ न आती।
वर्तमानकाल के भेद वर्तमान काल के तीन भेद हैं -
1. सामान्य वर्तमान काल
2. अपूर्ण वर्तमान काल
3. संदिग्ध वर्तमान काल

1. सामान्य वर्तमान काल क्रिया के जिस रूप से क्रिया का वर्तमान समय में सामान्य रूप से होने का पता चले उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।
जैसे - रजत खाना खा रहा है।
जैसे- रजनीश पढ़ता है।

2. अपूर्ण वर्तमान काल - क्रिया के जिस रूप से वर्तमान काल में उसके पूर्ण न होने का बोध हो, उसे अपूर्ण वर्तमान काल कहते हैं।
जैसे -कोमल नाच रही है।
वह विद्यालय जा रहा है।
3. संदिग्ध वर्तमान काल-क्रिया के जिस रूप से उसके वर्तमान समय में होने में संदेह का बोध हो, उसे संदिग्ध वर्तमान काल कहते हैं;

जैसे -अंशु आ रही होगी।

सुनीता पढ़ रही होगी।

भविष्यत काल के भेद भविष्यत काल के दो भेद हैं

1. सामान्य भविष्यत् काल 2. संभाव्य भविष्यत् काल

1. सामान्य भविष्यत् कालक्रिया के जिस रूप से यह पता चले कि क्रिया का व्यापार आने वाले समय में सामान्य रूप से होगा, उसे सामान्य भविष्यत् काल कहते हैं।

जैसे- पिताजी मेरे लिए घड़ी लाएंगे।

हम पाठ याद करेंगे।

माताजी हमें घुमाने ले जाएगी।

2. संभाव्य भविष्यत् कालक्रिया के जिस रूप से किसी काम के भविष्य में होने की संभावना प्रकट हो, उसे संभाव्य भविष्यत् काल कहते हैं।

जैसे -शायद वर्षा होगी।

शायद वह तुम्हारे घर आए।

***मुहावरा की परिभाषा**

ऐसे वाक्यांश, जो सामान्य अर्थ का बोध न कराकर किसी विलक्षण अर्थ की प्रतीति कराये, मुहावरा कहलाता है।

साधारण अर्थ में - मुहावरा किसी भाषा में आने वाला वह वाक्यांश है, जो अपने शाब्दिक अर्थ को न बताकर किसी विशेष अर्थ को बताता है।

1)**अँगारे बरसना**- अत्यधिक गर्मी पड़ना।

- जून मास की दोपहरी में अंगारे बरसते प्रतीत होते हैं।

2)**गारों पर पैर रखना**- कठिन कार्य करना।

- युद्ध के मैदान में हमारे सैनिकों ने अंगारों पर पैर रखकर विजय प्राप्त की।

3)अँगारे सिर पर धरना- विपत्ति मोल लेना।

- सोच-समझकर काम करना चाहिए। उससे झगड़ा लेकर व्यर्थ ही अंगारे सिर पर मत धरो।

3)**अँगूठा चूसना**- बड़े होकर भी बच्चों की तरह नासमझी की बात करना।

- कभी तो समझदारी की बात किया करो। कब तक अंगूठा चूसते रहोगे?

4)**आस्तीन का साँप**- कपटी मित्र।

- प्रदीप से अपनी व्यक्तिगत बात मत कहना, वह आस्तीन का साँप है; क्योंकि आपकी सभी बातें वह अध्यापक महोदय को बता देता है।

5)**कान भरना**- चुगली करना।

- मोहन ने सोहन से कहा कि आज साहब नाराज हैं, किसी ने उनके कान भरे हैं।

6)**गाल बजाना**- डींग मारना।
- केवल गाल बजाने से सफलता नहीं मिल सकती, इसके लिए परिश्रम भी परम आवश्यक है।

7)**घी के दीये जलाना**- खुशी मनाना।
- अपने प्रतिद्वन्द्वी की हार पर सुनील ने घी के दीये जलाए।

8)**जी-जान लड़ाना**- बहुत परिश्रम करना।
- हमने तो कार्यक्रम की सफलता के लिए जी-जान लड़ा दी, किन्तु उन्हें कोई बात पसन्द ही नहीं आती।

9)**दंग रह जाना-** आश्चर्यचकित होना।
- बाबा के चमत्कारों को देखकर मैं तो दंग रह गया।

10)**दाँत खट्टे करना**- हरा देना।
- भारतीय सैनिकों ने कारगिल युद्ध में पाकिस्तानी सैनिकों के दाँत खट्टे कर दिए।

11)**पानी फेर देना**- निराश कर देना।
- अनमोल ने विद्यालय छोड़कर अपने पिता की उम्मीदों पर पानी फेर दिया।

12)**बाँछे खिल जाना**- प्रसन्नता से भर उठना।।
- अपनी प्रोन्नति का समाचार सुनकर शशांक की बाँछे खिल गईं।

13)हवा से बातें करना- बहुत तेज गति से दौड़ना।
- चेतक राणा के सवार होते ही हवा से बातें करने लगता था।

14)**होश उड़ जाना-** घबरा जाना।
- सामने से शेर को आता देखकर शिकारी के होश उड़ गए।

लोकोक्तियाँ

लोकोक्ति का अर्थ होता है-लोक की उक्ति अर्थात लोगों द्वारा कही गई बात। इसमें लौकिक जीवन का सत्य एवं अनुभव समाया होता है, ये स्वयं में एक पूर्ण वाक्य होती है; जैसे-अधजल गगरी छलकत जाए। इसका अर्थ है-कम जानकार द्वारा अपने गुणों का बखान करना।

➢ **लोकोक्ति के कुछ प्रचलित उदाहरण**

1) अंधों में काना राजा (मूर्खा में कम पढ़ा लिखा व्यक्ति) – हमारे गाँव में एक कंपाउंडरे ही लोगों का इलाज करता है, सुना नहीं है-अंधों में काना राजा।
2) अंधा चाहे दो आँखें (जिसके पास जो चीज नहीं है, वह उसे मिल जाना) – आयुष को एक घर की चाह थी, वह उसे मिल गया ठीक ही तो है–अंधा चाहे दो आँखें।
3) अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत (काम खराब हो जाने के बाद पछताना बेकार है) – पूरे वर्ष तो पढ़े नहीं अब परीक्षा में फेल हो गए, तो आँसू बहा रहे हो। बेटा, अब पछताए होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत।।
4) आटे के साथ घुन भी पिस जाता है (अपराधी के साथ निर्दोष भी दंड भुगतता है) – क्षेत्र में दंगा तो गुंडों ने मचाया, पुलिस दुकानदारों को भी पकड़कर ले गई। इसे कहते हैं, आटे के साथ घुन भी पिस जाता है।
5) आगे नाथ न पीछे पगहा (जिम्मेदारी का न होना) – पिता के देहांत के बाद रोहन बिलकुल स्वतंत्र हो गया है। आगे नाथ न पीछे पगहा।।
6) धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का (कहीं का न रहना) – बार-बार दल-बदल करने वाले नेता की स्थिति धोबी के कुत्ते ' जैसी हो जाती है, वह ने घर का न घाट का रह जाता है।
7) खोदा पहाड़ निकली चुहिया (अधिक परिश्रम कम लाभ) – सारा दिन परिश्रम के बाद भी कुछ नहीं मिला।
8) आ बैल मुझे मार (जान बूझकर मुसीबत मोल लेना) – बेटे के जन्मदिन पर पहले सबको बुला लिया अब खर्चे का रोना रोता है। सच है आ बैल मुझे मार।
9) नाच न जाने आँगन टेढ़ा (काम तो आता न हो, दूसरों में दोष निकालना) – काम करना तो आता नहीं, कहते हो औजार खराब है। इसी को कहते हैं नाच न जाने आँगन टेढ़ा।
10) भीगी बिल्ली बनना (दबकर रहना) – लाला की नौकरी करना है, तो भीगी बिल्ली बनकर रहना पड़ेगा।

➢ कारक

कारक	विभक्ति या कारक चिह्न
1 कर्ता	ने
2. कर्म	को
3. करण	से, द्वारा
4.सम्प्रदान	को, के लिए
5. अपादान	से
6. सम्बन्ध	का, के, की, रा, रे, रो, ना, ने, नी
7. अधिकरण	में, पर
8. सम्बोधन	हे, हो, अरे, अजी, अहो आदि।

1) कर्ता कारक

i) राम ने पत्र लिखा।
(ii) हम कहाँ जा रहे हैं।
(iii) रमेश ने आम खाया।
(iv) सोहन किताब पढ़ता है।
(v) राजेन्द्र ने पत्र लिखा।
(vi) अध्यापक ने विद्यार्थियों को पढ़ाया।
(vii) पुजारी जी पूजा कर रहे हैं।
(viii) कृष्ण ने सुदामा की सहायता की।

2)कर्म कारक

जैसे -

(i) अध्यापक , छात्र को पीटता है।
(ii) सीता फल खाती है।
(iii) ममता सितार बजा रही है।
(iv) राम ने रावण को मारा।
(v) गोपाल ने राधा को बुलाया।
(vi) मेरे द्वारा यह काम हुआ।
(vii) कृष्ण ने कंस को मारा।
(viii) राम को बुलाओ।
(ix) बड़ों को सम्मान दो।
(x) माँ बच्चे को सुला रही है।
(xi) उसने पत्र लिखा।

3)करण कारक

जैसे -

(i) बच्चे गेंद से खेल रहे हैं।
(ii) बच्चा बोतल से दूध पीता है।
(iii) राम ने रावण को बाण से मारा।
(iv) सुनील पुस्तक से कहानी पढ़ता है।
(v) कलम से पत्र लिख है।

4) संप्रदान कारक

(i) गरीबों को खाना दो।
(ii) मेरे लिए दूध लेकर आओ।
(iii) माँ बेटे के लिए सेब लायी।
(iv) अमन ने श्याम को गाड़ी दी।

(v) मैं सूरज के लिए चाय बना रहा हूँ। (vii) भूखे के लिए रोटी लाओ।
(viii) वे मेरे लिए उपहार लाये हैं। (ix) सोहन रमेश को पुस्तक देता है।

5) **अपादान कारक**

(i) पेड़ से आम गिरा। (ii) हाथ से छड़ी गिर गई।
(iii) सुरेश शेर से डरता है। (iv) गंगा हिमालय से निकलती है।
(v) लड़का छत से गिरा है। vi) पेड़ से पत्ते गिरे।
(vii) आसमान से बूँदें गिरी। (viii) वह साँप से डरता है।
(ix) दूल्हा घोड़े से गिर पड़ा। (x) चूहा बिल से बाहर निकला।
(xi) पृथ्वी सूर्य से दूर है।

6) संबंध कारक

जैसे -

(i) सीतापुर, मोहन का गाँव है। (ii) सेना के जवान आ रहे हैं।
(iii) यह सुरेश का भाई है। (iv) यह सुनील की किताब है।
(v) राम का लड़का, श्याम की लडकी, गीता के बच्चे। (vi) राजा दशरथ का बड़ा बेटा राम था।
(vii) लड़के का सिर दुःख रहा है।

7)अधिकरण कारक

जैसे -

(i) हरी घर में है। (ii) पुस्तक मेज पर है।
(iii) पानी में मछली रहती है। (iv) फ्रिज में सेब रखा है।
(v) कमरे में अंदर क्या है। (vi) कुर्सी आँगन में बिछा दो।
(vii) महल में दीपक जल रहा है। viii) मुझमें शक्ति बहुत कम है।
(ix) रमा ने पुस्तक मेज पर रखी। (x) कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध हुआ था।
(xi) तुम्हारे घर पर चार आदमी है।
(xii) उस कमरे में चार चोर हैं।

8)संबोधन कारक

जैसे -

(i) हे ईश्वर ! रक्षा करो। (ii) अरे ! बच्चो शोर मत करो।
(iii) हे प्रभु ! यह क्या हो गया। (iv) अरे भाई ! यहाँ आओ।
(v) अजी ! तुम उसे क्या मारोगे ? (vi) बाबूजी ! आप यहाँ बैठें।
(vii) अरे मुकेश ! जरा इधर आना। (viii) अरे ! आप आ गये।

समास

1. द्वन्द्व समास

- माता-पिता
- भाई-बहन
- सुख-दुःख
- ऊँचा – नीचा

राम-कृष्ण
पाप-पुण्य
राजा- रंक
भला- बुरा

2. द्विगु समास

- नवरत्न
- त्रिभुवन
- त्रिफला
- शताब्दी

सप्तदीप
सतमंजिल
पंचवटी
सप्ताह

3. तत्पुरुष समास

मतदाता
- जन्मजात
- गुणहीन
- सत्याग्रह
- भयभीत
- प्रेमसागर
- भारतरत्न
- आत्मविश्वास

गिरहकट
मुँहमाँगा
हथकड़ी
धनहीन
जन्मान्ध
दिनचर्या
नीतिनिपुण
घुड़सवार

4. कर्मधारय समास

- कालीमिर्च
- पीताम्बर
- सद्गुण
- नीलगाय
- नीलकंठ

नीलकमल
चन्द्रमुखी
महाराजा
भलामानस
नीलांबर

5. अव्ययीभाव समास

यथास्थान
प्रतिदिन
भरपेट
निडर
हाथोंहाथ
यथामति

आजीवन
यथासमय
आमरण
दिनोंदिन
प्रतिदिन
भरसक

6. बहुव्रीहि समास

- महात्मा
- लम्बोदर
- चक्रधर
- चतुर्भूर्ज
- नीलकंठ

नीलकण्ठ
गिरिधर
चन्द्रशेखर
दशानन
त्रिनेत्र

➢ क्रियाविशेषण पहचान के उनके प्रकार के नाम लिखिए|

1-मैं अभी आ रहा हूं।- कालवाचक क्रियाविशेषण
2- वह संभवत चला गया है | - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
3 -फिर कभी चलेंगे। - कालवाचक क्रियाविशेषण
4- जिधर देखो पानी ही पानी है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
5- मैं प्रात:काल उठ जाता हूँ | - कालवाचक क्रियाविशेषण
6 -पानी निरंतर बह रहा है। - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
7-भीतर जाकर बैठिए|- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
8- भाई अवश्य आएगा|- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
9- वह सवेरे टहलने जाता है |- कालवाचक क्रियाविशेषण
10- यहां से चले जाइए।- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
11- अधिक खेलना ठीक नहीं |- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
12- किधर जा रहे हो |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
13- मेरा घर इस ओर है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
14- थोड़ा थोड़ा अभ्यास कीजिए |- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
15- वह अधिक बोलता है|- परिमाणवाचक क्रियाविशेषण
16- दिन जल्दी जल्दी ढलता है।- रीतिवाचक क्रियाविशेषण
17- वह बाहर खड़ा है |- स्थानवाचक क्रियाविशेषण
18- संभव है कि वह आए|- - रीतिवाचक क्रियाविशेषण
19- वह मेरे घर बहुधा आता है |- कालवाचक क्रियाविशेषण
20- धीरे-धीरे चलिए |- रीतिवाचक क्रियाविशेषण

➢ बहुविकल्पी प्रश्न। (वाच्य)

1. जिस वाक्य में भाव प्रधान हो, क्रिया एकवचन पुल्लिंग हो वह कहलाता है
   (i) भावानुसार वाच्य (ii) **भाववाच्य**
   (iii) कर्मवाच्य (iv) कर्तृवाच्य
2. जिस वाक्य में कर्म प्रधान हो, क्रिया कर्म के अनुसार आए वह होता है
   (i) कर्मवाच्य (ii) कर्तृवाच्य
   (iii) भाववाच्य (iv) कोई अन्य
3. जिस वाक्य में कर्ता प्रधान हो, क्रिया कर्ता के अनुसार आए तो वह होता है
   (i) कर्तावाच्य **(ii) कर्तृवाच्य**
   (iii) कर्मवाच्य (iv) भाववाच्य

4. वाच्य के कितने भेद होते हैं
(i) तीन (ii) दो
(iii) चार (iv) पाँच
5. जब क्रिया का प्रधान विषय कर्ता हो तो होता है
(i) कर्मवाच्य (ii) भाववाच्य
(iii) कर्तृवाच्य (iv) इनमें से कोई नहीं
6. जिस क्रिया में भाव की प्रधानता होती है, तब होता है-
(i) भाववाच्य (ii) कर्मवाच्य
(iii) कर्तृवाच्य। (iv) उपयुक्त सभी

अशुद्ध वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए

1.शुद्ध और अशुद्ध वाक्य हिंदी में अशुद्ध वाक्यों का शोधन करे --

अशुद्ध	शुद्ध
दस लड़की पढ़ रही है।	दस लड़कियाँ पढ़ रही है।
श्याम ने मुझे आगरा दिखाई।	श्याम ने मुझे आगरा दिखायया
लता बड़ा मीठा गाता है।	लता बड़ा मीठा गाती है।
महादेवी वर्मा बड़ी विद्वान है।	महादेवी वर्मा बड़ी विदुषी है।
मैंने हँस पड़ा।	मैं हंस पड़ा।
मेरे को घर जाना है।	मुझे घर जाना है।
यमुना के अंदर पानी भरा है।	यमुना में पानी भरा है।
जितनी करनी वैसी भरनी।	जैसी करनी वैसी भरनी
गुफा में बड़ा अंधेरा है।	गुफा में घना अंधेरा है।
भेड़ और बकरियाँ चररही हैं।	भेड़ और बकरियाँ घर रहे हैं।
आप वहाँ अवश्य जाओ।	आप यहाँ अवश्य जाइए।
शत्रु डर कर दौड़ गया।	शत्रु डर कर भाग गया
मैने अपनी कलम मेरे भाई को दे दी।	मैने अपनी कलम अपने भाई को दे दी।

(**साहित्य- विभाग)**

➢ **सही विकल्प चुनकर लिखिए |**

1) नायक के रूप में सबसे पहले किसका चयन हुआ था?
(a) विट्ठल (b) मेहबूब
(c) जुबैदा (d) याकूब

2) सुदामा कहाँ जा रहे थे?
(a) मंदिर (b) अपनी पत्नी के गाँव
(c) अपने मित्र कृष्ण के पास (d) अपने पिता जी से मिलने
3) श्रीकृष्ण ने सुदामा की दशा कैसी देखी?
(a) दयनीय (b) ठीक-ठाक
(c) हीन (d) अच्छी
4) श्रीकृष्ण ने सुदामा के पाँव कैसे धोए?
(a) परात में जल लेकर **(b) अपने अश्रु से**
(c) साबुन से (d) गंगाजल से
5) सुदामा ने चावलों की पोटली कहाँ रखी हुई थी?
(a) काँख में (b) बैग में
(c) हाथ में (d) गठ्ठरी में
6) पुडुकोट्टई जिला किस प्रदेश में है?
(a) केरल (b) आंध्रप्रदेश
(c) तमिलनाडु (d) कर्नाटक
7) ग्रामीण महिलाओं ने साइकिल रूप में चुना है?
(a) स्वाधीनता (b) आजादी
(c) गतिशीलता **(d) उपर्युक्त सभी**
8) पुडुकोट्टई की गणना भारत के सर्वाधिक जिलों में की जाती है?
(a) शिक्षित (b) अशिक्षित
(c) खनिज से भरपूर (d) पिछड़े
9) लोटा नीचे किससे गिरा?
(a) झाऊलाल से (b) झाऊलाल की पत्नी से
(c) अंग्रेज़ से (d) बिलवासी से
10) पंडित बिलवासी जी क्यों आए थे?
(a) झाऊलाल से मिलने
(b) लाला झाऊलाल को ढाई सौ रुपये देने
(c) अंग्रेज़ का मित्र
(d) पुलिस
11) गोपी ने यशोदा को किसकी शिकायत की?
(a) बलराम (b) बाल सखा
(c) कृष्ण (d) पड़ोसी की
12) कृष्ण किस समय गोपियों के घर से मक्खन चुराते थे?
(a) प्रातः **(b) दोपहर**
(c) शाम (d) रात
13) सितार के तारों सी झंकार कहाँ-से उत्पन्न हुई थी?
(a) सितार से (b) पानी
(c) बूंद से (d) बादल से
14) बूंद किसके समान थी?
(a) चाँदी जैसी **(b) मोतियों जैसी**
(c) ओस जैसी (d) पानी के

15) समुद्र का भाग कौन बन चुकी थी?
(a) नदियाँ (b) मछलियाँ
(c) जल में रहने वाले पेड़ पौधे **(d) पानी की बूंद**

16) एक दिन अचानक साँप की गुफा में क्या गिर पड़ा?
(a) मोर (b) कबूतर
(c) बाज (d) गिद्ध

17) आकाश की ऊँचाइयों को नापने की बात कौन कर रहा है?
(a) मोर **(b) बाज**
(c) साँप (d) कबूतर

18) गवरा, गवरइया के शरीर को कैसा बता रहा है?
(a) मोटा ताजा (b) दुबला पतला
(c) अनगढ़ **(d) सुगढ़**

19) दरजी ने टोपी पर कितने फुदने लगाए ?
(a) पाँच फूंदने (b) चार फूंदने
(c) तीन फूंदने (d) दो फंदने

20) गवरइया ने राजा को कैसा बताया?
(a) अच्छा (b) बुरा
(c) डरपोक (d) सच्चा

➢ निम्नलिखित अतिलघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

प्रश्न-1 'जब सिनेमा ने बोलना सीखा' पाठ के लेखक कौन हैं?
उत्तर – 'जब सिनेमा ने बोलना सीखा' पाठ के लेखक प्रदीप तिवारी जी हैं।

प्रश्न-2 विट्ठल किन भाषाओं की फिल्मों में नायक थे?
उत्तर – विट्ठल मराठी और हिंदी भाषाओं की फिल्मों में नायक थे।

प्रश्न-3 'आलम आरा' का संगीत किस फॉर्म में रिकॉर्ड नहीं किया गया?
उत्तर – 'आलम आरा' का संगीत डिस्क फॉर्म में रिकॉर्ड नहीं किया गया।

प्रश्न-4 विट्ठल के मुकदमा लड़ने वाले वकील का क्या नाम था?
उत्तर – विट्ठल के मुकदमा लड़ने वाले वकील का नाम मोहम्मद अली जिन्ना था।

प्रश्न-5 मुकदमा जीतने से विट्ठल को क्या लाभ हुआ?
उत्तर – मुकदमा जीतने से विट्ठल पहली बोलती फिल्म में नायक बने।

प्रश्न-6 'आलम आरा' फिल्म कब बनी और सर्वप्रथम कहाँ प्रदर्शित हुई?
उत्तर - यह फिल्म 14 मार्च 1931 को मुंबई के 'मैजेस्टिक' सिनेमा में प्रदर्शित हुई।

प्रश्न-7 विट्ठल फिल्मों में लम्बे समय तक किस रूप में सक्रिय रहे?
उत्तर – विट्ठल फिल्मों में लम्बे समय तक नायक और स्टंटमैन के रूप में सक्रिय रहे।

प्रश्न-8 अर्देशिर की कंपनी ने तकरीबन कितने फिल्में बनाई?
उत्तर – अर्देशिर की कंपनी ने भारतीय सिनेमा के लिए डेढ़ सौ से अधिक मूक और लगभग सौ सवाक फिल्में बनाईं।

प्रश्न-9 पाठ में लेखक ने 'आलम आरा' की तुलना किस फैंटसी फिल्म से की है?
उत्तर – पाठ में लेखक ने 'आलम आरा' की तुलना 'अरेबियन नाइट्स' नामक फैंटसी फिल्म से की है।

प्रश्न-10 सवाक फिल्मों के लिए कैसे विषय को चुना गया?
उत्तर – सवाक फिल्मों के लिए पौराणिक कथाओं, पारसी रंगमंच के नाटकों, अरबी प्रेम कथाओं को विषय के रूप में चुना गया।

प्रश्न -11 'जहा पहिया है' के लेखक कौन ह?

उत्तर – 'जहाँ पहिया है' के लेखक पी. साईनाथ जी हैं।

प्रश्न-12 'पुडुकोट्टई' किस राज्य में है?

उत्तर – 'पुडुकोट्टई' तमिलनाडु राज्य में है।

प्रश्न-13 अंग्रेज़ व्यक्ति ने लोटा कितने में खरीदा?

उत्तर – अंग्रेज़ व्यक्ति ने लोटा पाँच सौ रूपए में खरीदा।

प्रश्न-14 न्यूटन कौन थे?

उत्तर – न्यूटन इंग्लैंड के एक वैज्ञानिक थे जिन्होंने गुरुत्वाकर्षण का नियम और गति के सिद्धांत की खोज की थी।

प्रश्न-15 जब अंग्रेज़ व्यक्ति पर लोटा गिरा तब वह कहाँ था?

उत्तर – जब अंग्रेज़ व्यक्ति पर लोटा गिरा तब वह एक दुकान से पीतल की कुछ पुरानी मूर्तियाँ खरीद रहा था।

प्रश्न-16 साँप ने बाज़ को अभागा क्यों कहा?

उत्तर – साँप ने बाज़ को अभागा इसलिए कहा क्योंकि बाज़ ने आकाश की आज़ादी को प्राप्त करने में अपने प्राणों की बाज़ी लगा दी।

प्रश्न-17साँप अपनी गुफा से क्या - क्या देखा करता था?

उत्तर – अपनी गुफा में बैठा हुआ साँप सब कुछ देखा करता - लहरों का गर्जन, आकाश में छिपती हुई पहाड़ियाँ, टेढ़ी मेढ़ी बल खाती हुई नदी।

प्रश्न-18 गवरइया जब राजा के महल गई तब राजा क्या कर रहा था?

उत्तर – गवरइया जब राजा के महल गई तब राजा मालिश करवा रहा था।

प्रश्न-19 जब गवरइया धुनिया के पास गई तब वह क्या कर रहा था?

उत्तर – जब गवरइया धुनिया के पास गई तब वह राजा के लिए रजाई बनाने के काम में व्यस्त था।

प्रश्न-20 गवरइया ने धुनिया को मज़दूरी के रूप में क्या देने की बात कही?

उत्तर – गवरइया ने धुनिया को मज़दूरी के रूप में रुई का आधा हिस्सा देने की बात कही।

भारत की खोज

पाठ-6 से 9

1 किसके नेतृत्व में कांग्रेस सक्रिय बनी?

उत्तर : , गांधी जी के नेतृत्व में कांग्रेस सक्रिय बनी।

प्रश्न- 2 गांधीजी मूलतः कैसे व्यक्तिथे?

उत्तर: गांधीजी मूलतः धर्म प्राण व्यक्ति थे।

प्रश्न:3 पंजाब में क्या लागू हुआ?

उत्तर: पंजाब में मार्शल लॉ लागू हुआ।

प्रश्न:4 मिस्टर जिन्ना की मांग क्या थी?

उत्तर : भारत के दो राष्ट्र हिंदू और मुसलमान।

प्रश्न:5 मुस्लिम लीग के कणधार कौन थे?

उत्तर :मुस्लिम लीग के कर्णधार मोहम्मद अली जिन्ना थे।

प्रश्न:6 कांग्रेस का विभाजन किन दो दलों में हुआ?

उत्तर : कांग्रेस का विभाजन 1) नरम दल और 2) गरमदल में हुआ।

प्रश्न:7 अंग्रेजों ने मार्शल ला लागू कहां किया?

उत्तर: अंग्रेजों ने मार्शल लॉ पंजाब में लागू किया।

प्रश्न:8 भारत छोड़ो प्रस्ताव कब और कहां हुआ?

उत्तर: मुंबई में 7, 8 अगस्त 1942 को।

प्रश्न:9 भारत में तनाव को बढ़ा?

उत्तर : 1942 में।

प्रश्न:10 भारत छोड़ो प्रस्ताव पर किसने विचार प्रस्तुत किया था?

उत्तर: भारत भारत छोड़ो प्रस्ताव पर अखिल भारतीय कांग्रेस ने विचार प्रस्तुत किया।

प्रश्न: 11 भारत के शहरों पर किस तरह के हमलों की संभावना थी?

उत्तर: भारत के शहरों पर हवाई हमलो की संभावना बढ़ गई ।

प्रश्न:12 किसके नेतृत्व में जन आंदोलन शुरू करने की बात कही गई?

उत्तर: गांधी जी के नेतृत्व में जन आंदोलन शुरू करने की बात कही गई

प्रश्न: 13 भारत की बीमारी क्या थी? और भारत किस से बीमार था?

उत्तर: : भारत की बीमारी अकाल थी और वह तन और मन दोनों से बीमार था।

प्रश्न 14 अंग्रेजी शासनकाल में भारत ने किन क्षेत्रों में उन्नति की?

उत्तर: रेलगाड़ी, छापामार,डाक विभाग आदि।

प्रश्न-15 18वीं शताब्दी में बंगाल में किस प्रभावशाली व्यक्तित्व का उदय हुआ?

उत्तर : राजाराम मोहन राय ।

प्रश्न: 16राजा राममोहन राय के व्यक्तित्व में किसका मेल था?

उत्तर: नवीन ज्ञान।

प्रश्न:17 भारत का पहला स्वतंत्रता संग्राम कब हुआ था?

उत्तर 1857 में ।

प्रश्न: 18 आर्य समाज की स्थापना किसने की?

उत्तर : आर्य समाज की स्थापना दयानंद सरस्वती ने की ।

प्रश्न-19 ब्रिटिश सरकार के कौन से दो विशेष महकमे थे?

उत्तर: मालगुजारी और पुलिस।

प्रश्न:20 " मेरी आकांक्षा है हर आंख से हर आंसू को पूछ लेना" यह शब्द किसने कहे थे?

उत्तर: महात्मा गांधी ने।

➢ लघु प्रश्नों के उत्तर लिखिए |

1) **सुदामा की दीनदशा देखकर श्रीकृष्ण की क्या मनोदशा हुई?**

उत्तर- सुदामा की हालत देखकर श्रीकृष्ण को बहुत दुख हुआ। दुख के कारण श्री कृष्ण की आँखों से आँसू बहने लगे। उन्होंने सुदामा के पैरों को धोने के लिए पानी मँगवाया। परन्तु उनकी आँखों से इतने आँसू निकले कि उन्ही आँसुओं से सुदामा के पैर धुल गए।

2) अपने गाँव लौटकर जब सुदामा अपनी झोंपड़ी नहीं खोज पाए तब उनके मन में क्या-क्या विचार आए?

उत्तर- द्वारका से लौटकर सुदामा जब अपने गाँव वापस आएँ तो अपनी झोंपड़ी के स्थान पर बड़े-बड़े भव्य महलों को देखकर सबसे पहले तो उनका मन भ्रमित हो गया कि कहीं वे घूम फिर कर वापस द्वारका ही तो नहीं चले आए। फिर सबसे पूछते फिरते हैं तथा अपनी झोपड़ी को ढूँढ़ने लगते हैं।

3) प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई?

उत्तर- प्रारम्भ में साइकिल आंदोलन चलाने में कुछ मुश्किलें आईं जैसे-

- सर्वप्रथम गाँव के लोग बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने महिलाओँ के उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया।
- महिलाओँ के साइकिल चलाने पर उन पर फ़ब्तियाँ कसी।

महिलाओँ के पास साइकिल शिक्षक का अभाव था, जिसके लिए उन्होंने स्वयं साइकिल सिखाना आरम्भ किया और आंदोलन की गति पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।

4) बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध कहाँ से किया था?

उत्तर- बिलवासी जी ने रुपयों का प्रबंध अपनी पत्नी के संदूक से चोरी करके निकाल कर किया था। यद्यपि चाबी उसकी पत्नी की सोने की चेन में बँधी रहती थी, पर उन्होंने चुपचाप उसे उतार कर ताली से संदूक खोल लिया था और रुपए निकाल लिए थे। बाद में वे रुपए चुपचाप वहीं रख भी दिए। पत्नी कुछ न जान पाई।

5) बालक कृष्ण किस लोभ के कारण दूध पीने के लिए तैयार हुए?

उत्तर- यशोदा माँ बालक कृष्ण को लोभ देती थी कि यदि वह नियम से प्रतिदिन दूध पीएँगे तो उनकी चोटी भाई बलराम की तरह लंबी और मोटी हो जाएगी। कृष्ण अपने बाल बढ़ाना चाहते थे इसलिए वह ना चाहते हुए भी दूध पीने के लिए तैयार हो गए।

6) कृष्ण अपनी चोटी के विषय में क्या-क्या सोच रहे थे?

उत्तर- कृष्ण अपनी चोटी के बारे में सोचते थे कि उनकी चोटी भी दूध पीने से बलराम भैया के जैसी लंबी-मोटी हो जाएगी। माता यशोदा हर रोज उन्हें पीने को दूध देती थी, फिर भी उनकी चोटी बढ़ नहीं रही थी।

7) तैं ही पूत अनोखौ जायौ" पंक्ति में ग्वालन के मन के कौन से भाव मुखरित हो रहे हैं?

उत्तर- ये शब्द ग्वालन ने यशोदा से कहे। वह शिकायत करती हुई कहती है कि नटखट कृष्ण प्रतिदिन उनके घर से मक्खन चोरी करके खा जाते हैं। वह यशोदा से कहती हैं कि उन्होंने अनोखे पुत्र को जन्म दिया है जो दूसरों से

अलग हैं।

8) ओंस की बूँद क्रोध और घृणा से क्यों काँप उठी?

उत्तर – ओंस की बूँद के अनुसार पेड़ की जड़ों के रोएँ बहुत निर्दयी होते हैं। वे बलपूर्वक जल-कणों को पृथ्वी में से खींच लेते हैं। कुछ को तो पेड़ एकदम खा जाते हैं और ज्यादातर पानी के जो कण हैं वो अपने असस्तिव को खो देते है और उनका सब कुछ छीन जाता है और पेड़ के द्वारा उन्हें बाहर निकाल दिया जाता है, यानी के वह अपना रूप खो देते हैं। यह सब बताते हुए ओंस की बून्द का शरीर क्रोध और घृणा से काँप रहा था।

9) हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को पानी ने अपना पूर्वज/पुरखा क्यों कहा?

उत्तर **–** ओस की बून्द लेखक को बताती है कि अरबों वर्ष पहले 'हाइड्रोजन' और 'ऑक्सीजन' के मिलने से वह पैदा हुई है। उन्होंने आपस में मिलकर अपना प्रत्यक्ष अस्तित्व गँवा दिया है और उसे उत्पन्न किया है। इसी कारण वह हाइड्रोजन और ऑक्सीजन को अपना पूर्वज/पुरखा कहती है।

10) घायल बाज को देखकर साँप खुश क्यों हुआ होगा?

उत्तर **–** साँप का शत्रु बाज है चूँकि वो उसका आहार होता है। घायल बाज उसे किसी प्रकार का आघात नहीं पहुँचा सकता था इसलिए घायल बाज को देखकर साँप के लिए खुश होना स्वाभाविक था।

11) गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने क्यों जड़ दिए?

उत्तर- गवरइया की टोपी पर दर्जी ने पाँच फुँदने इसलिये जड़ दिए क्योंकि उसने दर्जी को मजदूरी के रूप में आधा

कपड़ा दे दिया था। खुश होकर उसने टोपी को और सुन्दर बना दिया था।

दीर्घ प्रश्न

प्रश्न-1 भरा-पूरा परिवार कैसे सुखद बन सकता है और कैसे दुखद? कामचोर कहानी के आधार पर निर्णय कीजिए?

उत्तर- यदि सारा-परिवार मिल जुलकर कार्य करे तो घर को सुखद बनाया जा सकता है। इससे घर के किसी भी सदस्य पर अधिक कार्य का दबाव नहीं पड़ेगा। सब अपनी अपनी कार्यक्षमता के आधार पर कार्य को बाँट लें व उसे समय पर निपटा लें तो सब को एक दूसरे के साथ वक्त बिताने का अधिक समय मिलेगा इससे सारे घर में आपसी प्रेम का विकास होगा और खुशहाली ही खुशहाली होगी। इसके विपरीत यदि घर के सदस्य घर के कामों के प्रति बेरूखा व्यवहार रखेंगे और किसी भी काम में हाथ नहीं बटाएँगे तो सारे घर में अशांति ही फैलेगी, घर में खर्च का दबाव बनेगा, घर के सभी सदस्य कामचोर बन जाएँगे और अपने कामों के लिए सदैव दूसरों पर निर्भर रहेंगे जिससे एक ही व्यक्ति पर सारा दबाव बन जाएगा। यदि इन सबसे निपटने की कोशिश की गई तो वही हाल होगा जो कामचोर में घर के बच्चों ने घर का किया था। वे घर की शन्ति व सुःख को एक ही पल में बर्बाद कर देंगे। इसलिए चाहिए कि बचपन से ही बच्चों को उनके काम स्वयं करने की आदत डालनी चाहिए ताकि उन्हें आत्मनिर्भर भी बनाया जाए और घर के प्रति ज़िम्मेदार भी।

प्रश्न:2 बड़े होते बच्चे किस प्रकार माता-पिता के सहयोगी हो सकते हैं और किस प्रकार भार? कामचोर कहानी के आधर पर अपने विचार व्यक्त कीजिए।

उत्तर]-अगर बच्चों को बचपन से अपना कार्य स्वयं करने की सीख दी जाए तो बड़े होकर बच्चे माता-पिता के बहुत बड़े सहयोगी हो सकते हैं। वह अगर अपने आप नहा धोकर स्कूल के लिए तैयार हो जाएँ, अपने जुराब स्वयं धो लें व जूते पालिश कर लें, अपने खाने के बर्तन यथा सम्भव स्थान पर रख आएँ, अपने कमरे को सहज कर रखें तो माता-पिता का बहुत सहयोग कर सकते हैं। यदि इससे उलटा हम बच्चों को उनका कार्य करने की सीख नहीं देते तो वह सहयोग के स्थान पर माता-पिता के लिए भार ही साबित होंगे। उनके बड़ा होने पर उनसे कोई कार्य कराया जाएगा तो वह उस कार्य को भली-भांति करने के स्थान पर तहस-नहस ही कर देंगे, जैसे की कामचोर लेख पर बच्चों ने सारे घर का हाल कर दिया था।

प्रश्न:3 चोरी की बान में हौ जू प्रवीने।"

उपर्युक्त पंक्ति कौन, किससे कह रहा है?

इस कथन की पृष्ठभूमि स्पष्ट कीजिए।

इस उपालंभ "शिकायत" के पीछे कौन-सी पौराणिक कथा है?

उत्तर-यहाँ श्रीकृष्ण अपने बालसखा सुदामा से कह रहे हैं कि तुम्हारी चोरी करने की आदत या छुपाने की आदत अभी तक गई नहीं। लगता है इसमें तुम पहले से अधिक कुशल हो गए हो। सुदामा की पत्नी ने श्रीकृष्ण के लिए भेंट स्वरूप कुछ चावल भिजवाए थे। संकोचवश सुदामा श्रीकृष्ण को यह भेंट नहीं दे पा रहे हैं। क्योंकि कृष्ण अब द्वारिका के राजा हैं और उनके पास सब सुख-सुविधाएँ हैं। परन्तु श्रीकृष्ण सुदामा पर दोषारोपण करते हुए इसे चोरी कहते हैं और कहते हैं कि

चोरी में तो तुम पहले से ही निपुण हो। इस शिकायत के पीछे एक पौरोणिक कथा है। जब श्रीकृष्ण और सुदामा आश्रम में अपनी-अपनी शिक्षा ग्रहण कर रहे थे। उस समय एक दिन वे जंगल में लकड़ियाँ चुनने जाते हैं। गुरूमाता ने उन्हें रास्ते में खाने के लिए चने दिए थे। सुदामा श्रीकृष्ण को बिना बताए चोरी से चने खा लेते हैं। उसी चोरी की तुलना करते हुए श्रीकृष्ण सुदामा को दोष देते हैं।

"प्रश्न -4 साइकिल आंदोलन" से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कौन-कौन से बदलाव आए हैं?

उत्तर- साइकिल आंदोलन से पुडुकोट्टई की महिलाओं के जीवन में कई बदलाव आए हैं-

- साइकिल आंदोलन से महिलाएँ छोटे-मोटे बाहर के काम स्वयं करने लगी।
- साइकिल आंदोलन से वे अपने उत्पाद कई गाँव में ले जाकर बेचने लगी।
- साइकिल आंदोलन से उनकी आर्थिक स्थिति सुधरी है।
- साइकिल आंदोलन से समय और श्रम की बचत हुई है।
- साइकिल आंदोलन ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाया।

प्रश्न : 5 प्रारंभ में इस आंदोलन को चलाने में कौन-कौन सी बाधा आई?

उत्तर- प्रारम्भ में साइकिल आंदोलन चलाने में कुछ मुश्किलें आईं जैसे-

- सर्वप्रथम गाँव के लोग बहुत ही रूढ़िवादी थे। उन्होंने महिलाओँ के उत्साह को तोड़ने का प्रयास किया।
- महिलाओँ के साइकिल चलाने पर उन पर फ़ब्तियाँ कसी।
- महिलाओँ के पास साइकिल शिक्षक का अभाव था, जिसके लिए उन्होंने स्वयं साइकिल सिखाना आरम्भ किया और आंदोलन की गति पर कोई असर नहीं पड़ने दिया।

प्रश्न : 6 बिलवासी मिश्र कहाँ आते दिखाई पड़े? उन्होंने आते ही क्या किया? उन्होंने अंग्रेज के साथ किस प्रकार सहानुभूति प्रकट की?

उत्तर-पं. बिलवासी मिश्र भीड़ को चीरते हुए आँगन में आते दिखाई पड़े। उन्होंने आते ही पहला काम यह किया कि उस अंग्रेज को छोड़ कर बाकी जितने लोग थे सबको बाहर कर रास्ता दिखाया और फिर आगँन में कुर्सी रखकर उन्होंने उस अंग्रेज से कहा कि उसके पैर में शायद कुछ चोट आ गई है। इसलिए वह आराम से कुर्सी पर बैठ जाइए। जब पं. बिलवासी ने अंग्रेज को बैठने को कहा तो अंग्रेज बिलवासी जी को धन्यवाद देते हुए बैठ गया। लाला झाऊलाल की ओर इशारा करके अंग्रेज ने बिलवासी जी से पूछा कि क्या वे लाला को जानते हैं? बिलवासी बिलकुल मुकर गए और कहते हैं कि वे लाला को बिलकुल नहीं जानते और न ही वह ऐसे आदमी को जानना चाहते हैं जो राह चलते व्यक्तियों को लोटे से चोट पहुँचाए।

प्रश्न : 7 द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा मार्ग में क्या-क्या सोचते जा रहे थे? वह कृष्ण के व्यवहार से क्यों खीझ रहे थे?

उत्तर- द्वारका से खाली हाथ लौटते समय सुदामा का मन बहुत दुखी था। वे कृष्ण द्वारा अपने प्रति किए गए व्यवहार के बारे में सोच रहे थे कि जब वे कृष्ण के पास पहुँचे तो कृष्ण ने आनन्द पूर्वक उनका आतिथ्य सत्कार किया था। क्या वह सब दिखावटी था? वे कृष्ण के व्यवहार से खीझ रहे थे क्योंकि केवल आदर-सत्कार करके ही श्रीकृष्ण ने सुदामा को खाली हाथ भेज दिया था। वे तो कृष्ण के पास जाना ही नहीं चाहते थे। परन्तु उनकी पत्नी ने उन्हें जबरदस्ती मदद पाने के लिए कृष्ण के पास भेजा। उन्हें इस बात का पछतावा भी हो रहा था कि माँगे हुए चावल जो कृष्ण को देने के लिए भेंट स्वरूप लाए थे, वे भी हाथ से निकल गए और कृष्ण ने उन्हें कुछ भी नहीं दिया।

प्रश्न: 8 "पानी की कहानी" के आधार पर पानी के जन्म और जीवन-यात्रा का वर्णन अपने शब्दों में कीजिए?

उत्तर – "पानी की कहानी" के आधार पर पानी का जन्म अरबों वर्ष पहले 'हाइड्रोजन' और 'ऑक्सीजन' के मिलने से पानी का जन्म हुआ और तब से लेकर पानी की जीवन यात्रा बहुत ही विचित्र रही है। जन्म के बाद पानी ने ठोस रूप बर्फ का रूप लिया और गर्म धारा के द्वारा तरल रूप ले लिया। वहां से समुद्र के तल तक यात्रा कर के जमीन के द्वारा ज्वालामुखी तक पहुँच गया और वहां पर गर्मी के कारण वाष्प रूप ले लिया और आकाश में आंधी के साथ मिल गया। अधिक वाष्प कण हो जाने पर बारिश के रूप में वापिस पृथ्वी पर आ गया। वहाँ से नदियों के सहारे दोबारा जमीन द्वारा सोख लिया गया और पेड़ों द्वारा वाष्पीकरण से दोबारा भाप की स्थिति में आ कर वायुमंडल में घूमने लगा।